IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोरोना वायरस महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव

पूजा गोस्वामी
कनिष्ठ शोध अध्येता
गृह विज्ञान विभाग
Email ID: Pooja1000goswami@gmail.com
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

डॉ0 सुषमा सिंह
सह प्राध्यापिका
गृह विज्ञान विभाग
Email ID: perfectsushma6@gmail.com
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

सारांश

कोरोना वायरस महामारी के कारण विकास के सभी क्षेत्र प्रभावित हुए हैं, लेकिन यदि बात शिक्षा जगत की जाए तो यह गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण छात्रों के जीवन में कई परिवर्तन आये, महामारी के दौरान लगभग 32 करोड़ छात्रों का स्कूल, कालेज छूट गये तथा वे शिक्षण गतिविधियों से दूर हो गये। छात्रों के भविष्य व शिक्षा के महत्व को देखते हुए ऑनलाइन शिक्षा का प्रारम्भ किया गया, जो कि शिक्षा में निरन्तरता बनाये रखने हेतु अच्छा विकल्प है, ऐसा नहीं है कि महामारी से पूर्व हम ऑनलाइन शिक्षा से अवगत नहीं थे उससे पहले भी छात्र व शिक्षण संस्थान पठन–पाठन हेतु इस माध्यम का सहारा लेते थे लेकिन तब यह वैकल्पिक था कि छात्र व शिक्षण संस्थान किस माध्यम से पढ़ना व पढ़ाना चाहते है, लेकिन महामारी ने इस विकल्प को हर छात्र व शिक्षण संस्थान हेतु आवश्यक बना दिया और लॉकडाउन के समय यह शिक्षा जगत के लिए अंधेरे में रोशनी के रूप में सामने आया, जिसने शिक्षण संस्थानों को मार्ग दिखाया कि उन्हें किस दिशा में जाना है। यह पेपर आनलाइन शिक्षण विधि को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा उठाये गये कदमों का उल्लेख करता है साथ ही महामारी का शिक्षा पर पड़ने वाले सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण व कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द :–कोरोना वायरस महामारी, प्रभाव, शिक्षा

प्रस्तावना

साल 2019 इतिहास को कोरोना वायरस महामारी के लिए याद रखा जाएगा इस महामारी ने ना केवल लाखों लोगों की जान ली वरन् जीवन की रफ्तार को भी धीमा कर दिया। कोरोना वायरस जिसकी शुरूआत चीन के वुहान शहर ने दिसम्बर 2019 में हुई, जो आज भी पूरी दुनिया के लिए एक गम्भीर समस्या बना हुआ है। कोरोना एक जुनोटिक रोग है जिसका अर्थ होता है पशुजन्य रोग अर्थात् एक ऐसा रोग जो पशुओं से इंसानों में फैलता है। यह वायरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह व एक आर.एन.ए. वायरस है।

भारत एवं दुनिया में कोरोना वायरस से संक्रमण के नए मामले हर रोज सामने आ रहे हैं। नए साल के साथ ही कोरोना वेरिएंट ओमिक्रॉन का खतरा भी आ गया है अगर दुनिया भर में कुल कोरोना के केस की बात की जाए तो ये 41 करोड़ के पार पहुंच चुका है और 58 लाख से अधिक लोगों की इससे मौत हो चुकी है। भारत में कुल मामले 4 करोड़ के पार हो गया है और कोरोना से मरने वालों की संख्या पांच लाख पहुँच चुकी है।

युनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में लगभग 463 करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो लॉकडाउन के दौरान आनलाइन शिक्षा का लाभ नहीं उठा सके। 83 प्रतिशत देशों ने लॉकडाउन के दौरान पढ़ाने के लिए आनलाइन शिक्षण विधि का सहारा लिया। वैश्विक स्तर पर 4 में 3 बच्चे जो आनलाइन शिक्षा का लाभ नहीं उठा पाये वो या तो ग्रामीण क्षेत्र से या निम्न वर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखते थे व 31 प्रतिशत बच्चे ऐसे थे जो कि आनलाइन शिक्षा का लाभ नहीं उठा सके।

शिक्षा युवा पीढ़ी को जीवन कौशल प्रदान करती है साथ ही उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जिसका आरम्भ जन्म से ही हो जाता है और जीवनपर्यन्त व्यक्ति किसी न किसी रूप में सिखता रहता है।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ है सीख, जिससे मनुष्य का विवेक व चेतना जागृत होती है कोरोना वायरस महामारी के कारण जीवन के सभी क्षेत्र प्रभावित हुए चाहे वो आर्थिक हो, सामाजिक या फिर शिक्षा जगत। महामारी के कारण सभी स्कूल, कालेज, पार्क, रेस्टोरेन्ट, होटल, सिनेमाघर बंद कर दिये गये, जिन्दगी चार दिवारी के मध्य सिमट कर रह गयी। शिक्षण संस्थानों के बंद हो जाने के कारण शिक्षण प्रक्रिया गंभीर रूप से प्रभावित हुई जो छात्र हर रोज विद्यालय जाकर कुछ नया सीखते थे, अपने भविष्य को लेकर सपने देखते थे, व उन्हे पूरा करने हेतु प्रयास करते थे लॉकडाउन के कारण वे घर के चहारीवारी में बंद हो गये व अपने पढ़ाई सपने व भविष्य को लेकर चिंतित होने लगे, यह चिंता व तनाव केवल बच्चों तक ही नहीं था वरन् अभिभावक भी उनके भविष्य को लेकर तनाव में रहने लगे, छात्रों के भविष्य व उसके प्रति उनकी एवं उनके अभिभावकों के चिंता व तनाव को देखते हुए सरकार ने सभी शिक्षण संस्थानों से शिक्षा को आनलाइन विधि से संचालित करने की अपील की जिससे न केवल बच्चों की शिक्षा को लेकर तनाव दूर हुआ बल्कि लॉकडाउन में भी शिक्षा में निरन्तरता बनी रही।

उद्देश्य :

1. महामारी के दौरान, शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयासों का विश्लेषण करना।
2. कोरोना वायरस महामारी का शिक्षा पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव की तुलना करना।

क्रियाविधि–

अध्ययन हेतु आँकड़ों का संकलन कोरोना वायरस महामारी के सन्दर्भ में अधिकृत सूचनाएँ व आँकड़े उपलब्ध कराने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसी व वेबसाइट से किया गया है।

महामारी के दौरान शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास

शिक्षा मंत्रालय ने आगामी पाँच वर्षो में आनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री और संसाधनों के विकास एवं अनुवाद हेतु 2,306 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रस्ताव रखा है। कोरोना वायरस के दुष्प्रभाव को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा कई कदम उठाये गये। केन्द्र सरकार ने 24 मार्च 2020 देशभर में लॉकडाउन लगा दिया। महामारी के गम्भीर व जानेलवा प्रभाव को देखते हुए सभी शिक्षण संस्थान बंद कर दिये गये व परीक्षाएं भी टाल दी गयी, तथा कुछ कक्षाओं के बच्चों को बिना परीक्षा के ही पास कर दिया गया जहां परीक्षाएं हुई वहां इस शर्त के साथ के दो बच्चों के मध्य 1 मीटर की दूरी व एक कक्षा में केवल 24 बच्चे ही बैठ सकते हैं। लोक सेवा आयोग (2019) के साक्षात्कार रद्द कर दिया गया। केन्द्र एवं राज्य सरकार के आदेशानुसार बच्चों की कक्षाएँ आनलाइन प्रारम्भ कर दी गयी। लॉकडाउन के दौरान तकनीक के महत्व को समझा गया तथा यह आवश्यकता समझी गयी कि इस तरह की तकनीक को और बढ़ावा दिया जाए जिससे भविष्य में शिक्षा जगत के सामने ऐसी समस्या दोबारा न आये। जिस हेतु शिक्षा मंत्रालय द्वारा माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा को आनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध कराने हेतु किए गये प्रयास निम्नलिखित है :–

दीक्षा पोर्टल :-

यह एक ऐसा पोर्टल है जिस पर पाठ्यक्रम के अनुसार किताबे, वीडियो व अन्य पाठ्य सामग्री उपलब्ध है, यह पाठ्य सामग्री 250 शिक्षकों के द्वारा अलग–अलग भाषा में तैयार की गयी होती है। इस पोर्टल पर 80,000 से अधिक ई–बुक्स 1 से 12 वीं कक्षा के बच्चों के लिए कई भाषाओं में उपलब्ध है। पाठ्य सामगी को **''क्यू आर''** कोड के माध्यम से भी देखा जा सकता है। इसका एप भी है जिसे गुगले प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है।

ई–पाठशाला –

ई–पाठशाला पोर्टल एक संयुक्त रूप से भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा नवम्बर 2015 में प्रारम्भ किया गया। ई–पाठशाला शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों व शोधकर्ताओं हेतु शैक्षिक संसाधनों की मेजबानी करता है। यह अंग्रेजी, हिंदी व उर्दू भाषाओं में उपलब्ध है। यहाँ पर पाठय पुस्तक, पत्रिकाओं, आडियो, वीडियो प्रिंट व गैर प्रिंट सामाग्रियों सहित अन्य शैक्षणिक सामाग्रियों को प्राप्त कर सकते हैं। ई–पाठशाला पर इन सामाग्रियों के डाउनलोड पर कोई सीमा न होने के चलते उपयोगकर्ता उन्हें आफलाइन उपयोग के लिए डाउनलोड कर सकता है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किये गये प्रयास

स्वयं पोर्टल –

यह पोर्टल भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय जिसे बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया है एवं अखिल भारतीय तकनीकि शिक्षा परिषद द्वारा माइक्रोसाफ्ट की मदद से तैयार किया एक ऑनलाइन पोर्टल है। स्वयं पोर्टल की घोषणा 1 फरवरी 2017 को भारत सरकार द्वारा आम बजट में की गई थी जिसको 9 जुलाई 2017 को तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय प्रणव मुखर्जी ने लॉच किया। स्वयं पोर्टल को शिक्षा के तीन आधारभूत सिद्धान्तों पहुँच, निष्पक्षता व गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है यह विद्यार्थियों के लिए बनाया गया एक निःशुल्क पोर्टल है जिस पर 9वीं कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक के कोर्स उपलब्ध है इस पर प्रमाण पत्र भी प्राप्त हो जाते हैं। स्वयं पोर्टल पर वीडियो व्याख्यान, खास तौर पर तैयार की गयी अध्ययन सामग्री जो डाउनलोड व मुद्रित की जा सकती है।

स्वयं प्रभा –

यह 24x7 आधार पर देश में सभी जगह **''डीटीएच''** के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चैनल प्रदान करने की एक पहल है इसमें विविध विषयों की पाठ्यक्रम आधारित पाठ्य सामग्री होती है, इसका उद्देश्य गुणवत्ता वाले शिक्षण संसाधनों को दूरदराज के ऐसे क्षेत्रों तक पहुंचाना है जहाँ इंटरनेट की उपलब्धता आज भी एक चुनौती है। स्वयं प्रभा का प्रारम्भ 9 जुलाई 2017 को किया गया जिसमें कला, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी सामाजिक विज्ञान के साथ साथ इंजीनियरिंग, प्रोद्योगिकी कानून, चिकित्सा, कृषि आदि आधारित पाठ्यक्रम दिखाए जाते हैं।

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी –

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी एक ऑनलाइन लाइब्रेरी है इसकी सहायता से देश का कोई भी छात्र 70 लाख से अधिक किताबों को पढ़ सकता है। यह भारत की सबसे बड़ी ऑनलाइन लाइब्रेरी है।

ई–पीजी पाठशाला–

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने परास्नातक के छात्रों के लिए ई–पीजी पाठशाला प्रारम्भ किया है। जिसकी सहायता से छात्र ई–बुक्स को पढ़ पाऐंगे इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बिना इंटरनेट के भी छात्र किताबों को पढ़ सकते हैं।

महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव

मिश्रित शिक्षा का आरम्भ –

कोरोना वायरस महामारी के कारण लॉकडाउन के दौरान सभी शिक्षण संस्थानों ने शिक्षा प्रदान करने के लिए पारम्परिक विधि को छोड़कर आनलाइन विधि का सहारा लिया जिसके लिए शिक्षक व छात्र दोनों ने ही तकनीक को सीखा और अब उनके मन में तकनीक को लेकर कोई संकोच भी नहीं है, क्योंकि वे जानते हैं कि इसका प्रयोग उन्हें शिक्षा में किस प्रकार से करना है। यह बात सत्य है कि महामारी से पहले भी छात्र व शिक्षक, शिक्षा में तकनीक का प्रयोग करते हैं, लेकिन बहुत से ऐसे भी छात्र व शिक्षक थे जो कि इस तकनीक का इस्तेमाल करना नहीं जानते थे क्योंकि उन्होंने पहले कभी इसका प्रयोग नहीं किया था लेकिन महामारी के दौरान आनलाइन शिक्षा की अनिवार्यता ने उन्हें पढ़ाने के कई तकनीक से अवगत कराया जो कि एक सकारात्मक प्रभाव है।

शिक्षण सामग्री के रूप में सॉफ्ट कॉपी के उपयोग में वृद्धि–

लॉकडाउन के दौरान सभी स्कूल, कालेज, पुस्तकालय व शिक्षण संस्थान बन्द थे। छात्र पढ़ने के लिए पुस्तकालय नहीं जा सकते थे शिक्षकों एवं छात्रों ने पठन–पाठन के कार्य हेतु ऑनलाइन विधि से सॉफ्ट कॉपीज का सहारा लिया जिससे एक सकारात्मक प्रभाव यह पड़ेगा कि पेड़ों की कटाई में कमी आयेगी।

सहयोगात्मक कार्य को बढ़ावा–

महामारी के कारण सहयोगात्मक कार्य में वृद्धि हुई है, शिक्षक एक दूसरे के साथ मिलकर शिक्षण का कार्य कर रहे हैं वे एक दूसरे को शिक्षण कार्य में तकनीक का किस प्रकार से प्रयोग कर सकते हैं इसको सिखा रहे है। महामारी के कारण विभाग में सहयोग की भावना बढ़ी है (मिश्र 2020 के अनुसार)

ऑनलाइन सम्मेलन का अधिकाधिक आयोजन–

महामारी के कारण सामुहिक गतिविधियों पर पाबंदी लगा दी गयी सम्मेलन संगोष्ठी ऑनलाइन होना प्रारम्भ हो गया जिससे घर बैठे बैठे अनेक विषय विशेषज्ञों की विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर ज्ञानवर्द्धक बातों से लाभान्वित होने का छात्रों को मौका मिला।

तकनीकि साक्षरता में बढ़ोत्तरी–

महामारी के दौरान शिक्षकों व छात्रों ने शिक्षा में तकनीक के प्रयोग को सिखा जिससे तकनीकि साक्षरता में वृद्धि हुई।

दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा की मांग में वृद्धि –

दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें शिक्षक व शिक्षार्थी को स्थान विशेष और समय विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती है। सूचना क्रांति और इंटरनेट के कारण दूरस्थ व मुक्त शिक्षा और आसान एवं प्रासंगिक हो गयी है। कोरोना वायरस महामारी के कारण उसके मांग में वृद्धि हुई है।

कोरोना महामारी का शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव–

कोरोना का देश की शिक्षा पर बड़ा असर पड़ा है युनेस्कों की रिपोर्ट के अनुसार महामारी से भारत में लगभग 82 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है जिसमें 15.81 करोड़ लड़कियॉ एवं 16.25 करोड़ लड़के शामिल है वैश्विक स्तर पर इस महामारी से विश्व के 193 देशों के 157 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है।

कोरोना वायरस का प्रभाव समूचे विश्व पर पड़ा है महामारी के कारण सभी शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गये तथा कई परीक्षाएँ भी टाल दी गयी जिससे शिक्षण गतिविधियों में बाधा उत्पन्न हुई।

शिक्षा का असमान वितरण –

भारत एक कृषि प्रधान देश है महामारी के दौरान शिक्षा प्राप्त करने के लिए ऑनलाइन विधि का सहारा लिया गया जिसमें पढ़ने के लिए मोबाइल, लैपटाप, इंटरनेट जैसे महँगे साधनों की आवश्यकता होती है। भारत जैसे देश में हर बच्चे के पास यह साधन उपलब्ध हो यह सम्भव नहीं है। उच्च वर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखने वाले बच्चों के पास तो ये सभी साधन बड़ी ही आसानी से उपलब्ध होते हैं लेकिन वे बच्चे जो मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं उनके लिए इन सभी ऑनलाइन शिक्षण साधनों का उपलब्ध होना मुश्किल हो जाता है जिससे वे शिक्षा से वंचित हो जाते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा भी उन मुठ्ठी भर बच्चों तक ही पहुँच पा रही है जहाँ बच्चों के पास स्मार्ट फोन, लैपटाप के साथ–साथ इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है ऐसे में वे बच्चे ऑनलाइन शिक्षा किस प्रकार से प्राप्त कर सकेंगे जिनके पास ये साधन नहीं है।

सुझाव

- शिक्षा को सरकारों की पुनर्निर्माण योजनाओं का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए, ताकि दुनिया भर में हर बच्चे को निःशुल्क शिक्षा प्राप्त हो सके।
- महामारी के कारण स्कूलों के बन्द होने से छात्र असमान रूप से प्रभावित हुए, क्योंकि महामारी के दौरान बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर व साधनों की पहुंच नहीं थी सरकारों के पास आनलाइन शिक्षा शुरू करने के लिए ऐसी नीतियों,

संसाधनों व बुनियादी ढॉचे की कमी है जिससे कि सभी बच्चे समान रूप से शिक्षा हासिल कर सके जिसके लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

- सरकार को अपने शिक्षा बजट को संरक्षित करने एवं उसे बढ़ाने की आवश्यकता है साथ ही यह भी आवश्यक है कि शिक्षा को राष्ट्रीय प्रयासों के केन्द्र में रखा जाए।
- वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली खराब अवसंरचना एवं सुविधाओं से जूझ रही है इसलिए आवश्यक है कि सरकार देश के शिक्षा क्षेत्र का अवसंरचना में सुधार करने के लिए यथासम्भव प्रयास करें जिससे छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- Pravat Ka Jena (2020) Online learning during lockdown period for Covid-19 in India. International Journal of educational research 9(5) Pg. 82-92.
- Migra Kamlesh (2020) Covid-19 negative impact and opportunities created for education: retrived from hdttps:// www.indiatoday.in/educationtoday /teaturephilia/story/Covid-19.4 negtive impacts and-4 opportunities created for education 1677-206
- MHRD notice (2020) Covid-19 staysafe- digital initiatives.retrived from https://www.mohfw.gov.in/pdf/Covid-19 pdf.
- WHO (2022) WHO coronavirus (Covid-19) dashboard, World Health Organisation Covid-19 who.int
- Unicef (2020). education and covid-19 data.unicef org/topic/education and covid-19
- Kaya (H) (2020) Investigation of the effect of online education on eye health 10 covid-19 pandemic international journal of assessment tools in education 7(3) 488-496 DOI 10.21449 IJate ; 788078
- Kohli.H, Wampole, D & Kohli A (2021) impact of online education on student learning during the pandemic, studies in learning and teaching 2(2), 1-11 https:// doi.org/10-46627/silet.V 212.65
- Son C, Hyed, S. Smith A, Wang X (2020) effect of Covid-19 on college students mental health in the United States Interview survey study, Journal of medical Internet Research 22(9) https://doi.org/10.21 96/21279